परम पुरूषार्थ 'मोक्ष'

*प्रहलाद सहाय वर्मा

सारांश

मानव जीवन के सार्थक एवं सर्वांगीण विकास हेतु पुरूषार्थ चतुष्ट्य को प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनविार्य माना गया है। पुरूषार्थ चतुष्टय के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार व कर्तव्यों का निर्धारण होता है। पुरूषार्थ उस सार्थक जीवनरूपी शक्ति का द्योतक है जो व्यक्ति को सांसारिक सुखों का भोग कराके स्वधर्मपालन के माध्यम से परमात्मा (मोक्ष) की प्राप्ति कराता है। पुरूषार्थ चतुष्टय के अनुसार मोक्ष को मानव का अन्तिम लक्ष्य माना गया है। धर्मपूर्वक अर्थ व काम को ग्रहण करने से मोक्ष सुलभ हो जाता है तथा मोक्ष की प्राप्ति से मनुष्य कृतार्थ हो जाता है। महाभारत में मोक्ष सम्बन्धी अनेक प्रसंग है, जिनके अनुसार मोक्ष सर्वदा अलौकिक सुख और दिव्य शान्ति की विलक्षण अवस्था है। महाभारत में ज्ञान, भक्ति, निष्काम कर्म, धर्म तथा वैराग्य आदि को मोक्ष प्राप्ति के निमित्त कर्तव्य बताते हुए कहा गया है कि इस जगत में व्यक्ति को मोक्ष प्राप्ति हेतु निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिए।

कूट शब्दः आध्यात्मिक, पुरुषार्थ, त्रिवर्ग, मोक्षपरायण, वैराग्य, द्वैधभाव, भगवदर्पण, उद्वेग, परमात्मस्वरूप

प्रस्तावना

पुरुषार्थ का सिद्धान्त भारतीय संस्कृति की विशिष्ट देन है। इस सिद्धान्त की संरचना मनीषियों ने मानव जीवन के आध्यात्मिक और व्यावहारिक पक्ष को दृष्टि में रखकर की थी। पुरुषार्थ के अन्तर्गत मानव जीवन को प्रयोजन एवं उद्देश्य युक्त मानकर जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त करने का उपदेश दिया गया है। पुरुषार्थों की संख्या चार मानी गई है– धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष। ये चारों पुरुषार्थ मानव जीवन को गरिमामय बनाते है। अतः "धर्मार्थकाममोक्षाख्यं य इन्छेच्छेय आत्मनः" कहकर इन चारों पुरुषार्थो का सम्पादन करना ही मनुष्य का प्रधान लक्ष्य माना गया है। धर्म, अर्थ एवं काम, ये त्रिवर्ग सभी के लिए अभिलषित होते है। इनके सिद्ध हो जाने पर व्यक्ति को इस लोक तथा परलोक दोनो में अभ्युदय की प्राप्ति हो जाती हे। किन्तु मनुष्य के पुरुषार्थ की अन्तिम परिणति अर्थात् चतुर्थ पुरुषार्थ मोक्ष है। इसे परम पुरुषार्थ भी कहा जाता है क्योकि यह अतिशय आनन्द की अनुभूति है तथा इसके ऊपर जीवन के किसी लक्ष्य की कल्पना नहीं की जा सकती।

साधारणतया मोक्ष का अर्थ जीवन से मुक्ति प्राप्त करने के लिया जाता है। 'मोक्ष' शब्द की व्युत्पति 'मुच्' धातु से हुई है। जिसका अर्थ है मुक्त अथवा स्वतन्त्र करना। 'मुक्ति' शब्द भी 'मुच्लृ मोचने' धातु से 'क्तिन्'। प्रत्यय होकर बना है। इसका अर्थ है–बन्धनों से छूट जाना। अतः जन्म एवं पुनर्जम्म तथा सम्पूर्ण दुःख एवं बन्धनों से मुक्ति ही मोक्ष है–'मुच्यते सर्वेदुःखबन्धनैर्यत्र सः मोक्षः।' मोक्ष के विभिन्न पर्याय है, जैसे– कैवल्य, मुक्ति, निर्वाण, परमपद, ब्राह्मीस्थिति, परमसिद्धि, पूर्णता आदि। मोक्ष परमज्ञान एवं आनन्द की वह अवस्था है जिसमें जीव अपने परमब्रह्म अर्थात् आत्मा–परमात्मा को प्राप्त कर लेता है। मोक्ष का प्रत्यय सर्वोच्च ज्ञान से सम्बन्धित है। यह ज्ञान–शास्त्र का विषय है तथा आत्मा को स्वंय ढूँढ़ने का विज्ञान है। मोक्ष का न कोई आदि है और न ही अन्त। मोक्ष पूर्णता की स्थिति है जो स्वतः आनन्द स्वरूप है। संस्कृत साहित्य में प्रारम्भ से ही मोक्ष को श्रेष्ठ पुरूषार्थ के चरम उत्कर्ष की

अवस्था माना जाता है। मोक्षरूपी पुरूषार्थ का चिन्तन संस्कृत साहित्य के समस्त प्रसिद्ध ग्रन्थों में किया गया है। ऋग्वेद में– "मुञ्चन्ति पृथग्भवन्ति जना यस्यां सा मुक्ति" कहकर जिसमें (बन्धनों से) छूट जाना हो उसे मुक्ति कहा गया है। विष्णु पुराण में भी मोक्ष को परम् पुरूषार्थ माना गया है–

इति संसार दुःखार्क–ताप–तापित–चेतसाम्।

विमुक्ति पादपच्छायामृते कृत सुखं नृणाम्।।

मुण्डकोपनिषद् में मोक्ष की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा गया है कि "जिस तरह से समुद्र में नदियाँ खो जाती है। वे अपना नाम व रूप खो देती है, उसी तरह बुद्धिमान व्यक्ति अपने नाम व रूप से स्वतन्त्र होकर दैवी व्यक्तित्व में विलीन हो जाता है जो कि सबसे परे है।" वही मोक्ष है।

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय।

तथा विद्वान नामरूपाद् विमुक्तः परात परं पुरूषमुपैति दिव्यम्।।

आचार्य मनु के अनुसार जो व्यक्ति सभी प्राणियों में विद्यमान परमात्मा को आत्मा से देखता है वह सबमें समत्व प्राप्त करके ब्रह्म पद को प्राप्त करता है–

एवं यः सर्वभुतेषु पश्यत्यात्मानमात्मना।

स सर्वसंमतामेत्य ब्रह्माभ्येति परं पदम्।।

मोक्ष के सन्दर्भ में जैन दार्शनिकों का मत है–

"सम्यग् दर्शन ज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः।"

सांख्यशास्त्र के अनुसार शरीर के अन्त में उद्देश्यों के पूर्ण हो जाने पर तथा प्रकृति की निवृति हो जाने पर ज्ञानी पुरूष ऐकान्तिक तथा शाश्वत मोक्ष को प्राप्त करता है–

प्राप्ते शरीरभेदे चरितार्थत्वात् प्रधाननिवृतौ।

ऐकान्तिकमात्यन्तिकमुभयं कैवल्यमाप्नोति।।

महर्षि वेदव्यासकृत महाभारत प्राचीनकाल से मानव को श्रेष्ठ मार्ग दिखाने वाला एक महान पथ प्रदर्शक रहा है। जो तत्कालीन समय से लेकर आज तक सभी रूपों में प्रासंगिक है। मानव जीवन से सम्बद्ध प्रत्येक सूक्ष्म तत्वों का निरूपण इस ग्रंथ में हुआ है। इसके अतिरिक्त महाभारत पुरूषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष) का उद्घोषक आर्ष महाकाव्य रहा है। यहाँ त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ एवं काम) को गृहस्थ का कर्तव्य बताकर मनुष्य के अन्तिक लक्ष्य के रूप में मोक्ष को श्रेष्ठ पुरूषार्थ बताया गया है। महाभारत में मोक्ष का सुख ही वास्तविक सुख माना गया है, परन्तु जो मनुष्य धन–धान्य के उपार्जन में पुत्र और पशुओं में आसक्त है, उस मूढ़ मनुष्य को उसका यथार्थ ज्ञान नही होता–

सुखं मोक्षसुखं लोके न च मूढोऽवगच्छति।

प्रसक्तः पुत्रपशुषु धनधान्यसमाकुलः।।

भगवान श्रीकृष्ण गीता में मोक्ष सम्बन्धी विचार प्रकट करते हुए कहते हैं कि जो अन्तरात्मा में ही सुखवाला है, आत्मा में ही रमण करने वाला है तथा आत्मा में ही ज्ञानवाला है वह ब्रह्म को प्राप्त होता है। पापरहित, द्वैधभाव से रहित, सभी प्राणियों के हित में संलग्न, काम–क्रोध से रहित, जीते हुए चित्तवाले, परमात्मा का साक्षात्कार करने वाले ब्रह्मवेत्ता पुरूष निर्वाण (मोक्ष) को प्राप्त कर लेते है। बाह्म विषयों के भोग का चिन्तन न करते हुए, नेत्रों की दृष्टि को भृकुटी के मध्य में स्थित करके, नासिका में विचरने वाले प्राण और अपान वायु को सम करके, जितेन्द्रिय मोक्षपरायण मुनि लो इच्छा, भय और क्रोध से रहित हो वह मुक्त ही है–

योऽन्तः सुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः।

य योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति।।

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः।

छिन्नद्वैधा यतात्मनः सर्वभूतहिते रताः।।

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्।

अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्।।

स्पर्शान् कृत्वा बहिर्बाह्मांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रवोः।

प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्रेचारिणौ।।

यतेन्द्रियमनौबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः।

विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः।।

मनुष्य जब इस संसार रूपी माया के जाल में आता है तो ईश्वर की माया से आवृत हो जाने पर मनुष्य के ज्ञान और विवेक का नाश हो जाता है तब वे बुद्धि के मोह को क्रोध के वशीभूत हो जाते हैं और फिर काम से मनुष्य लोभ, मोह, दर्प, मान एवं अहंकार को प्राप्त होते हैं। इन सभी दोषों का अनुसरण करता हुआ मनुष्य महान दुःख उठाता है, लेकिन जब मनुष्य इनका त्याग करके परब्रह्म में लीन होकर अपने शुभ कर्मों में लगता है तो उसके ये सब दुःख दूर हो जाते हैं और वह मोक्ष की ओर प्रेरित होता है–

सर्वत्यागे च यतते दृष्ट्वा लोकं क्षयात्मकम्,

ततों मोक्षाय यतते नानुपायादुपायतः।

शनैर्निर्वेदमादत्ते पापं कर्म जहाति च,

धर्मात्मा चैव भवति मोक्षं च लक्षते परम्।

अर्थात् सम्पूर्ण लोकों को नाशवान समझकर जब मनुष्य सर्वस्व का मन से त्याग करने का यत्न करता है तदन्तर वह अयोग्य उपाय से नहीं किन्तु योग्य उपाय से मोक्ष के लिए यत्नशील हो जाता है। इस प्रकार धीरे–धीरे मनुष्य को वैराग्य की प्राप्ति होने पर वह पापकर्म छोड़ देता है और धर्मात्मा बन जाता है। तत्पश्चात् वह परम मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

मोक्ष प्राप्ति के साधनों में धर्म को मोक्ष का साधन बताते हुए वेदव्यास जी ने स्पष्ट किया है कि–

"धर्मे स्थितानां कौन्तेय सिद्धिर्भवति शाश्वती।।"

धर्म में सदा स्थित रहने वालों को मोक्षरूप परम सिद्धि प्राप्त होती है। शान्तिपर्व भी में वर्णित है कि परमात्मा निर्गुण होने के कारण अत्यन्त परे है। जो निवृत्तिरूप धर्म (निष्काम कर्म) है, वह अक्षय पद (मोक्ष) की प्राप्ति कराने में समर्थ है। इसके अतिरिक्त योग भी मोक्ष प्राप्ति का साधन है। ध्यानयोग को मोक्ष का साधन बताते हुए कहते है कि ध्यानजनित सुख से सम्पन्न होकर योगी उस ध्यानयोग में अधिकाधिक अनुरक्त हो जाता है तथा दुःख–शोक से रहित निर्वाण (मोक्ष) पद को प्राप्त हो जाता है–

सुखेन तेन संयुक्तो रंस्यते ध्यानकर्मणि।

गन्छन्ति योगिनो ह्येवं निर्वाणं तन्निरामयम्।।

गीता के अनुसार अपना सब कुछ भगवान को अर्पण कनके वाला व्यक्ति भी सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो जाता है। अतः व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए सब कर्मो को भगवदर्पण कर दे तथा ईश्वर का ही आश्रय ले–

सर्वधर्मा–परित्यज मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वां सर्वपापेभ्यों मोक्षयिष्मामि मा शुचः।।

वेदव्यास जी ने यह भी बताया कि राग–द्वेष से रहित होकर ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थी और संन्यासी अपने–अपने लिए निर्धारित कर्मों का विधिपूर्वक अनुष्ठान करके मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। वैराग्य भी मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। वैराग्य भी मोक्ष प्राप्ति का अनिवार्य साधन है क्योंकि वैराग्य से ही चंचल मन को नियन्त्रित किया जा सकता है। ज्ञान को मोक्ष का महत्वपूर्ण साधन बताते हुए कहा है कि ज्ञान के प्रभाव से जीव नित्य, अव्यक्त, अविनाशी परमात्मा को प्राप्त होता है। ज्ञान के द्वारा मनुष्य जन्म–मरणरूपी दुर्गम संसार–सागर से पार हो जाता है, तथा ज्ञान के द्वारा ही मनुष्य के दुखों का विनाश और मोक्ष लाभ होता है।

ज्ञानान्मोक्षों जायते राजसिंह

नास्त्य ज्ञानादेवमाहुर्नरेन्द्र।

तस्माज्ज्ञानं तत्त्वतोऽन्वेषितव्यं,

येनात्मानं मोक्षयेज्जन्ममृत्योंः।।

मोक्ष का मार्ग बताते हुए महाभारत में भीष्म पितामह द्वारा कहा गया है कि–मूढता और आसक्ति का अभाव काम और क्रोध का त्याग एवं दीनता, उदण्डता तथा उद्वेग से रहित होना और इन्द्रियों का संयम, यह मोक्ष का स्वच्छ एवं निर्मल मार्ग है–

अमूढत्वमसंगित्वं कामक्रोधविवर्जनम्।

अदैन्यमनुदीर्णत्वमनुद्वेगो व्यवस्थितिः।।

एष मार्गो हि मोक्षस्य प्रसन्नों विमलः शुचिः।।

वेदव्यास जी ने–शरीरान्त होना, जन्म–मरण से छुटकारा पाना, परमात्मस्वरूप का साक्षात्कार करना, इंद्रिय संयम, काम–क्रोध, राग–द्वेष आदि को त्याग देना हि 'मोक्ष' माना है। उनकी दृष्टि में वास्तविक सुख सांसारिक सुख नही

है, वास्तविक सुख मोक्ष की प्राप्ति है। इसलिए मोक्ष की प्राप्ति हेतु व्यक्ति को सदैव प्रयत्नशील रहना चहिए। भीष्म पितामह उत्तम धर्म का वर्णन करते हुए करते है कि यह संसार अनेक दोषों से परिपूर्ण है। ऐसा निश्चय करके बुद्धिमान पुरूष मोक्ष के लिए प्रयत्न करें–

एवं व्यवसिते लोके बहुदोषे युधिष्ठिर।

आत्ममोक्षनिमित्तं वै यतेत मातिमान् नरः।।

निष्कर्ष

इस प्रकार महाभारत में मोक्ष का प्रत्यय सर्वोच्च ज्ञान से सम्बन्धित है। मोक्ष पूर्णता की स्थिति है जो स्वतः ही आनन्द स्वरूप है। मोक्ष पूर्णतः वैयक्तिक लक्ष्य है लेकिन उसमें समाज की भावना अन्तर्निहित है। वैयक्तिक व सामाजिक दोनों स्थितियों में पुरूषार्थों में सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष है। धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चारों का संकलन ही पुरूषार्थ है किन्तु मोक्ष इन तीनों की पूर्णता की अवस्था है। इसलिए भीष्म पितामह कहते है कि यह जगत जन्म, मृत्यु और वृद्धावस्था के दुखों से, नानाप्रकार के रोगों तथा मानसिक चिन्तओं से व्याप्त है ऐसा समझकर बुद्धिमान पुरूष को मोक्ष के लिए ही प्रयन्त करना चाहिए। अतः महाभारत की सूक्ति में सन्देह नही है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के विषय में जो इसमे कहा गया है वही अन्यत्र है और जो इसमें नही है वह कहीं भी नही है–

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ

यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत् क्वाचित्।।

सह आचार्य संस्कृत
बाबा नारायण दास राजकीय
कला महाविद्यालय
चिमनपुरा (शाहपुरा) जयपुर

सन्दर्भ सूची

1. श्रीमद्भागवत
2. ऋग्वेद
3. विष्णुपुराण
4. मुण्डकोपनिषद्
5. मनुस्मृति
6. संख्यकारिका
7. महाभारत–शा० प०
8. महाभारत–श्रीमद्भगवद्गीता
9. महाभारत–शा० प०
10. महाभारत–शा० प०
11. महाभारत–शा० प०